दैनिक सचएक्सप्रेस
सत्यम् सदैव सुन्दरम्...

भोपाल ट्विशा मौत मामला

जेल में द प्रेग्नेंट किंग पढ़ती मिलीं गिरिबाला सिंह, महिला आयोग ने की मुलाकात

भोपाल

भोपाल। ट्विशा शर्मा मौत मामले में न्यायिक हिरासत में भोपाल सेंट्रल जेल में बंद रिटायर्ड जिला जज गिरिबाला सिंह से बुधवार को मध्यप्रदेश महिला आयोग की टीम ने मुलाकात की। आयोग की टीम महिला कैदियों और बंदियों की स्थिति का जायजा लेने जेल पहुंची थी। आयोग की अध्यक्ष रेखा यादव ने गिरिबाला सिंह से जेल में भोजन, स्वास्थ्य सुविधाओं और अन्य व्यवस्थाओं के बारे में जानकारी ली। इस दौरान गिरिबाला सिंह ने किसी भी प्रकार की परेशानी से इनकार करते हुए कहा कि जेल में सभी व्यवस्थाएं ठीक हैं और उन्हें कोई शिकायत नहीं है। जानकारी के अनुसार, आयोग की टीम जब उनके पास पहुंची, तब वे लेखक देवदत्त पटनायक की पुस्तक द प्रेग्नेंट किंग पढ़ रही थीं। टीम को देखते ही उन्होंने किताब बंद कर दी। बातचीत के दौरान वे काफी शांत नजर आईं। निरीक्षण के दौरान महिला आयोग की टीम को ऐसा कोई संकेत नहीं मिला कि गिरिबाला सिंह को जेल में किसी प्रकार की विशेष सुविधा उपलब्ध कराई जा रही हो।

क्या है द प्रेग्नेंट किंग की कहानी

देवदत्त पटनायक का उपन्यास द प्रेग्नेंट किंग पौराणिक कथा से प्रेरित है। कथा के अनुसार राजा युवनाश्व संतान प्राप्ति के लिए यज्ञ कराते हैं। यज्ञ के बाद रानियों के लिए तैयार किया गया मंत्रयुक्त पेय वे स्वयं पी लेते हैं, जिसके बाद वे गर्भवती हो जाते हैं। बाद में उनके शरीर से पुत्र मांधाता का जन्म होता है। इसी कथा को आधार बनाकर यह उपन्यास लिखा गया है।

लीगल एड के वकीलों ने पेश किया वकालतनामा

त्विषा शर्मा मामले में गिरिबाला सिंह की ओर से चीफ लीगल एड डिफेंस काउंसिल रीना वर्मा और श्रेयस सक्सेना ने जिला अदालत में वकालतनामा प्रस्तुत किया है। दोनों वकील विधिक सेवा प्राधिकरण से जुड़े हैं। इस कारण अदालत ने राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण से पूछा है कि उन्हें मामले में पैरवी की अनुमति दी जा सकती है या नहीं। कोर्ट ने इस संबंध में आवश्यक अनुमति और दिशा-निर्देश मांगे हैं।

दूसरी पोस्टमार्टम रिपोर्ट मिलने के बाद जांच तेज

त्विषा शर्मा की दूसरी पोस्टमार्टम रिपोर्ट सीबीआई को मिल गई है। जांच एजेंसी अब मेडिकल, डिजिटल और फॉरेंसिक साक्ष्यों का मिलान कर रही है। जांच का फोकस गर्भावस्था, शरीर पर मिले चोटों के निशान और फांसी के फंदे से जुड़े तथ्यों पर है। इसके अलावा मोबाइल और लैपटॉप से रिकवर किए गए चैट, कॉल रिकॉर्ड, फोटो, वीडियो और अन्य डिलीट किए गए डेटा का भी विश्लेषण किया जा रहा है, ताकि मामले की सभी कड़ियों को जोड़ा जा सके।

महिला बंदियों ने प्रस्तुत किए भजन

महिला आयोग की टीम ने जेल के महिला वार्ड, अस्पताल, रसोईघर, पुस्तकालय, आर्ट एंड क्राफ्ट सेंटर तथा ब्यूटी पार्लर का निरीक्षण किया। इस दौरान बंदियों से उनकी समस्याओं और जरूरतों के बारे में भी जानकारी ली गई। जेल के सांस्कृतिक कक्ष में महिला बंदियों के ऑर्केस्ट्रा दल ने भजन प्रस्तुत किए। निरीक्षण के दौरान आयोग के सचिव सुरेश तोमर, जेल अधीक्षक राकेश भांगरे सहित अन्य अधिकारी भी मौजूद रहे।

आवारा कुत्तों से परेशान लोग, शिकायत पर डॉग लवर्स से मिल रही धमकी, पुलिस से लगायी गुहार

ग्वालियर। मध्य प्रदेश के ग्वालियर में आवारा कुत्तों के आतंक से जहां लोग दहशत में हैं, वहीं डॉग लवर्स की धाकियों से परेशान हो रहे हैं। ऐसे ही कुछ रहवासी नगर निगम से सुनवाई नहीं होने पर पुलिस से मदद की गुहार लगाने एसपी ऑफिस पहुचे थे। लोगों ने अपनी बात पुलिस अधिकारियों के सामने रखी है जिस पर उन्हें कार्रवाई का आश्वासन दिया गया है।

असल में ग्वालियर जिले में हर दिन 400 के करीब केस डॉग बाइट के केस सामने आ रहे हैं। शहरी क्षेत्र में भी लोग आवारा कुत्तों से दहशत खा रहे हैं। इस बीच ग्वालियर के गंजी वाला मोहल्ला के दर्जनों रहवासी एसपी ऑफिस पहुंचे जिनकी सुनवाई नगर निगम ने नहीं की। लोगों का आरोप है कि, मोहल्ले के 7 लोगों को कुत्ते काट चुके हैं। निगम से शिकायत करने पर डॉग लवर धमका रहे हैं।

आवारा कुत्तों से परेशान लोग- असल में मामला माधौगंज थाना क्षेत्र के गंजी वाला मोहल्ला का है। मोहल्ले के रवि श्रीवास के साथ दर्जनों लोग बुधवार को एसपी ऑफिस में अपनी शिकायत लेकर पहुंचे। अपनी व्यथा कहते हुए लोगों ने बताया कि, पिछले कई महीनों से इलाके में 7-8 आवारा कुत्तों का आतंक छाया हुआ है। ये आवारा डॉग राह चलते लोगों को, बच्चों और बुजुर्गों पर हमलावर हो रहे हैं। उनके मोहल्ले में अब तक 7 लोगों को काट भी चुके हैं।

डॉग लवर दे रहे पीड़ितों को धमकी- लोगों का कहना है कि, हालत अब ऐसे हैं कि, स्कूली बच्चों का घर से निकलना मुश्किल हो गया है, दिन रात बाइक सवार भी इन कुत्तों की वजह से गिरकर घायल हो रहे हैं। जब इससे परेशान लोगों ने नगर निगम के हेल्प लाइन नंबर पर शिकायत की तो कुछ डॉग लवर उनके मोहल्ले में आए और उन्होंने कुत्तों को हटाने का विरोध किया और धमकी दी कि कुत्तों को हाथ भी लगाया तो कानूनी कार्रवाई करवा देंगे।

निगम पर लापरवाही का आरोप, प्रदर्शन की भी चेतावनी- लोगों का आरोप है कि नगर निगम आवारा कुत्तों की नसबंदी और टीकाकरण में लापरवाही बरत रहा है। इसी वजह से हर जगह कुत्तों की संख्या बढ़ रही है और वे हिंसक हो रहे हैं। शिकायत लेकर आए लोगों ने चेतावनी दी है कि अगर उनकी शिकायत पर अब जल्द कार्रवाई नहीं हुई तो वे कलेक्ट्रेट पर भी प्रदर्शन करेंगे।

पुलिस ने दिया कार्रवाई का आश्वासन- सीएसपी किरण अहिरवार का कहना है कि, गंजी वाला मोहल्ला के लोगों ने आवारा कुत्तों से परेशानी की शिकायत की है, उनके क्षेत्र में आवारा डॉग्स का आतंक है डॉग बाइट्स की घटनाएं हो रही हैं। और शिकायत के बाद भी नगर निगम से सुनवाई नहीं हो रही और उन्हें डॉग लवर्स द्वारा धमकाया जा रहा है। शिकायत के आधार पर मामले की जांच कराई जा रही है। नगर निगम के अधिकारियों से भी चर्चा की जाएगी। कानून के दायरे में जो भी कार्रवाई होगी की जाएगी।

इंदौर में सफाई के नए नियम लागू, 100 किलो कचरे का खुद करना होगा निपटान

इंदौर। नगर निगम ने शहर में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट) के नए नियम लागू कर दिए हैं। अब प्रतिदिन 100 किलो या उससे अधिक कचरा उत्पन्न करने वाली संस्थाओं को थोक कचरा उत्पादक (बल्क वेस्ट जनरेटर -) माना जाएगा। ऐसी संस्थाओं को अपने परिसर में ही गीले कचरे का निपटान करना होगा और कचरा प्रबंधन के लिए अलग व्यवस्था करनी होगी।

नगर निगम द्वारा जारी सार्वजनिक सूचना के अनुसार पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने पर्यावरण संरक्षण अधिनियम-1986 के तहत ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम-2026 लागू किए हैं। ये नियम 1 अप्रैल 2026 से प्रभावी हैं और अब नगर निगम सीमा क्षेत्र में इनका पालन अनिवार्य कर दिया गया है।

नए नियमों के दायरे में मैरिज गार्डन, होटल, रेस्टोरेंट, धर्मशाला, छात्रावास, सामुदायिक भवन, रहवासी संघ और अन्य बड़े संस्थान शामिल होंगे। यदि ये संस्थान प्रतिदिन 100 किलो या उससे अधिक कचरा पैदा करते हैं, तो उन्हें थोक कचरा उत्पादक की श्रेणी में माना जाएगा।

नगर निगम ने ऐसे संस्थानों के लिए कई दिशा-निर्देश जारी किए हैं। सभी थोक कचरा उत्पादकों को केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के केंद्रीकृत पोर्टल पर पंजीयन कराना होगा। संस्थानों में गीले, सूखे और घरेलू खतरनाक कचरे को अलग-अलग रखना अनिवार्य होगा। गीले कचरे का निपटान परिसर में ही पिट कम्पोस्टिंग, बायोगैस, ओडब्ल्यूसी मशीन या अन्य स्वीकृत तरीकों से करना होगा।

इसके अलावा गीले कचरे से तैयार खाद का उपयोग करने और सूखे कचरे का अधिकृत एजेंसियों के माध्यम से संग्रहण कराने की व्यवस्था भी करनी होगी।

अधिकमास में ओंकारेश्वर में उमड़ रही भीड़

दोपहर दो बजे बाद ओंकार पर्वत परिक्रमा के नौका संचालन पर रोक

ओंकारेश्वर। अधिकमास में भगवान ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन और मां नर्मदा के पावन तट पर रोज सैकड़ों श्रद्धालु उमड़ रहे हैं। ऐसे में श्रद्धालुओं की सुरक्षा को देखते हुए ओंकारेश्वर प्रशासन ने ओंकार पर्वत की संपूर्ण जल परिक्रमा के लिए चलने वाली नौकाओं का संचालन दोपहर 2 बजे बाद करने पर रोक लगा दी है। वहीं, मंदिर के आसपास के घाटों पर सूर्योदय से सूर्यास्त तक नौका संचालन की अनुमति रहेगी।

श्रद्धालुओं ने इस साल परमा एकादशी का व्रत आज रखा गया है। साथ ही इस दिन शोभन और सर्वार्थ सिद्धि योग बना हुआ है। जिससे इस दिन का महत्व और भी बढ़ गया है।

नगर परिषद ओंकारेश्वर की मुख्य नगर पालिका अधिकारी (सीएमओ) मोनिका पारधि ने बताया कि हाल ही में जबलपुर क्षेत्र में बरगी बांध के समीप आंधी-तूफान के दौरान हुई क्रूज दुर्घटना में कई लोगों की मृत्यु हो गई थी। इस घटना के बाद प्रदेशभर में जल परिवहन और नौका संचालन की सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा की जा रही है। इसी के तहत ओंकारेश्वर में भी श्रद्धालुओं की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया गया है।

आंधी और बारिश का चल रहा दौर- सीएमओ ने बताया कि वर्तमान समय में आंधी, तूफान और तेज बारिश का मौसम चल रहा है। दोपहर बाद मौसम अचानक बदल जाता है और तेज हवाओं के कारण नर्मदा नदी में नौका संचालन जोखिमपूर्ण हो सकता है। विशेष रूप से ओंकार पर्वत की जल परिक्रमा लगभग 6 से 7 किलोमीटर लंबी होती है। यदि परिक्रमा मार्ग के दौरान किसी प्रकार की दुर्घटना या आपात स्थिति उत्पन्न हो जाए तो तत्काल राहत एवं बचाव दल को वहां तक पहुंचने में कठिनाई होती है। इसी कारण दोपहर 2 बजे के बाद परिक्रमा मार्ग पर नौकाओं के

संचालन पर प्रतिबंध लगाया गया है- हालांकि, प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि यह प्रतिबंध केवल ओंकार पर्वत की संपूर्ण जल परिक्रमा करने वाली नौकाओं पर लागू होगा। श्रद्धालु सूर्यास्त तक अन्य घाटों के लिए नौका सेवा का लाभ ले सकेंगे। ब्रह्मपुरी घाट, चक्रतीर्थ घाट, केवलराम घाट, नगर घाट, गोमुख घाट, नया घाट, ओंकार मठ घाट तथा अन्य स्वीकृत घाटों के बीच नौका संचालन पूर्ववत सूर्यास्त तक जारी रहेगा।

नाविक संघ ने किया स्वागत- इस संबंध में ओंकारेश्वर नाविक संघ के अध्यक्ष कैलाश भंवरिया ने प्रशासन के निर्णय का स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि श्रद्धालुओं की सुरक्षा से बढ़कर कुछ भी नहीं है। नाविक संघ स्वयं भी लंबे समय से शाम 4 बजे के बाद परिक्रमा मार्ग पर नौकाएं भेजने से परहेज करता रहा है, क्योंकि मौसम का मिजाज अचानक बदलने पर खतरा बढ़ जाता है। उन्होंने कहा कि प्रशासन का यह निर्णय जनहित और सुरक्षा की दृष्टि से उचित है।

निर्माणाधीन सेप्टिक टैंक में उतरे दो सगे भाइयों की मौत, उन्हें बचाने गए मजदूर की हालत बिगड़ी

बैतूल। बैतूल जिले के मुलताई में निर्माणाधीन सेप्टिक टैंक में जहरीली गैस या ऑक्सीजन की कमी से दो सगे भाइयों की मौत हो गई, जबकि एक मजदूर गंभीर रूप से घायल है। एक-एक कर तीनों टैंक में उतरे और फंस गए। हादसे से क्षेत्र में शोक फैल गया है। जानकारी के अनुसार, मुलताई के भगत सिंह वार्ड स्थित एक मकान में सेप्टिक टैंक का निर्माण कार्य चल रहा था। बुधवार शाम कार्य के दौरान एक मजदूर टैंक के भीतर उतरा, लेकिन काफी देर तक बाहर नहीं आया। उसकी चिंता होने पर उसका भाई उसे देखने के लिए अंदर गया, लेकिन वह भी बाहर नहीं निकल सका। दोनों के काफी समय तक बाहर नहीं आने पर उनके साथ मौजूद एक अन्य मजदूर ने स्थिति का पता लगाने की कोशिश की। उसने टैंक के अंदर झांककर देखा तो दोनों अचेत अवस्था में पड़े थे। मदद के लिए आवाज लगाने के दौरान उसकी भी तबीयत बिगड़ गई और वह बेहोश हो गया।

स्थानीय लोगों ने तत्काल राहत कार्य शुरू करते हुए तीनों को अस्पताल पहुंचाया। चिकित्सकों ने जांच के बाद दोनों भाइयों को मृत घोषित कर दिया, जबकि तीसरे मजदूर की गंभीर हालत को देखते हुए उसे जिला अस्पताल भेजा गया। घटना की सूचना मिलते ही प्रशासन और पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी अस्पताल पहुंचे तथा मामले की जानकारी ली। प्रारंभिक जांच में आशंका जताई जा रही है कि लंबे समय से बंद पड़े टैंक के भीतर ऑक्सीजन की कमी या जहरीली गैस के जमा होने के कारण मजदूरों का दम घुट गया। हालांकि मौत के वास्तविक कारणों की पुष्टि पोस्टमार्टम रिपोर्ट मिलने के बाद ही हो सकेगी। इस हादसे ने एक बार फिर सीमित और बंद स्थानों में बिना सुरक्षा उपकरणों के काम करने के जोखिमों को उजागर कर दिया है। वहीं एक ही परिवार के दो भाइयों की असमय मौत से परिजनों और स्थानीय लोगों में गहरा दुख व्याप्त है।

आदिवासी गांव में सांसद की बैलगाड़ी राइड, होम स्टे में बिताई रात, ग्रामीणों को 2-2 लाख बांटे

छिन्दवाड़ा। सांसद बंटी विवेक साहू ने छिंदवाड़ा जिले के अंतिम छोर में बसे गांव टेकापार और मानेगांव में चौपाल लगाई। यहां उन्होंने ग्रामीणों को मोदी सरकार के 12 साल होने पर योजनाओं के बारे में बताया वहीं उनकी समस्याएं भी सुनीं। इस दौरान सांसद ने सुबह ग्राम टेकापार में चौपाल लगाते हुए शासकीय योजनाओं में लाभान्वित हितग्राहियों व आमजनों के साथ चर्चा की और आदिवासियों की समस्याओं को सुनते हुए उसका मौके पर ही निराकरण भी किया।

सांसद ने लिया होम स्टे का मजा, 16 परिवारों को दिए 2-2 लाख- मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड द्वारा विकसित पर्यटन ग्राम सावरवानी में पर्यटन विकास की असीम संभावनाएं हैं, इन गांव में होम स्टे बनाए गए हैं जहां पर सांसद ने रात्रि विश्राम किया और फिर बैलगाड़ी की सवारी का आनंद भी लिया। होमस्टे बनाने वाले 16 हितग्राहियों को दो-दो लाख रुपए के शासन की ओर से सांसद ने चेक भी वितरित किए। इसके साथ ही पर्यटन ग्राम सावरवानी के होम-स्टे का भ्रमण कर स्थानीय ग्रामीणों एवं होम-स्टे संचालकों से मुलाकात की।

सांसद ने गांव में लगाई चौपाल- इस दौरान उन्होंने ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने तथा स्थानीय लोगों को रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध कराने पर चर्चा की। सांसद ने सावरवानी की प्राकृतिक सुंदरता और यहां के पर्यटन विकास की संभावनाओं की सराहना करते हुए कहा कि ग्रामीण पर्यटन क्षेत्र की आर्थिक उन्नति का महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है।

आदिवासियों के साथ मंदिर में किया भजन- सांसद ने गांव में चलाए जा रहे पौधारोपण कार्यक्रम में शामिल होकर इसे सफल बनाने की अपील करते हुए चावलपानी स्कूल में गांव की महिलाओं के साथ में पौधारोपण भी किया। इसके साथ ही उन्होंने ग्राम अन्होनी और ग्राम बंधीढाना में मंदिर में पूजन-अर्चन करने के साथ ही यहां पर विकसित तीर्थस्थल का निरीक्षण किया। उन्होंने मंदिर में ग्रामीणों के साथ बैठकर भजन कीर्तन भी किया और मोदी सरकार की सफलता की कामना की।

सड़क, बिजली और पानी की समस्या का होगा जल्द निराकरण- सांसद बंटी विवेक साहू ने मानेगांव में चौपाल लगाते हुए लाडली बहना, पीएम किसान योजना, पेंशन के हितग्राहियों एवं आमजनों के साथ चर्चा की। इस दौरान ग्रामीण ने सांसद बंटी विवेक साहू के सामने सड़क, बिजली, पानी और बच्चों की शिक्षा की समस्याओं को रखा, जिस पर सांसद बंटी विवेक साहू ने मौके पर मौजूद विभागों के अधिकारियों को निर्देश देते हुए समस्याओं को जल्द से जल्द निराकरण करने के निर्देश दिए। सांसद ने मानेगांव में बनने वाले रंगमंच के निर्माण कार्य का भूमिपूजन भी किया।

रीवा के लाल ने 3 गोलियां खाकर लश्कर के आतंकी को किया था ढेर, राष्ट्रपति ने शौर्य चक्र से किया सम्मानित

रीवा। विंध्य की माटी मे जन्मे रीवा के लाल संजय तिवारी को उनकी अद्भुत वीरता के लिए राष्ट्रपति ने सम्मानित किया है। उनके अदम्य साहस और कर्तव्यनिष्ठा के लिए सोमवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने उन्हें शौर्य चक्र से सम्मानित किया है। सीआरपीएफ जवान संजय ने तीन गोलियां लगने के बाद भी आतंकी संगठन लस्कर लश्कर ए तैयबा के एक आतंकी को अपनी सूजबूझ से मार गिरया था। वहीं, राष्ट्रपति से सम्मानित होने के बाद संजय तिवारी बुधवार को रीवा में अपने गृह नगर पहुंचे जहां उनका जोरदार स्वागत हुआ।

नवंबर 2024 में जम्मू कश्मीर में दिखाया था अदम्य साहस- ईटीवी भारत से बातचीत में जवान संजय तिवारी ने बताया, घटना 2 नवंबर 2024 की है, देर रात लगभग 2 |45 पर श्रीनगर के खानयार पुलिस थाना अंतर्गत ठग मोहल्ले में पाकिस्तानी आतंकी संगठन लश्कर ए तैयबा के खूंखार आतंकी के छुपे होने का इनपुट मिला था। सीनियर अफसरों के निर्देश पर हम 8 सदस्यीय टीम के साथ आतंकी को पकड़ने की योजना तैयार कर चुके थे, मौके पर पहुंचकर हमने बिना समय गंवाए उस घर को चारों ओर से घेर लिया था, तभी आतंकी ने हमला कर दिया।

आतंकी ने दागी गोलियां, ग्रेनेड चलाया- संजय ने आगे बताया, लक्षित मकान के बाएं हिस्से में फायरबेस 3 पर स्वयं संजय तिवारी मुस्तैद हुए और अपनी पोजीशान ली। जैसे ही तलाशी शुरू हुई, आतंकी की ओर से अचानक गोलीबारी शुरू कर दी गई। इस दौरान संजय तिवारी ने निर्णायक रूप से कवर लिया और रणनीतिक रूप से जवाबी गोलीबारी की लेकिन इसी दरमियान घर के अंदर छुपे आतंकवादी द्वारा दो ग्रेनेड उनकी तरफ फेंके गए, जिसके फटने से पूरा क्षेत्र घने काले धुएं और मलबे से ढक गया।

3 गोलियां लगीं पर आतंकी को कर दिया ढेर- सीमित विजिबिलिटी होने के बावजूद, संजय तिवारी ने अपनी पोजीशान नहीं छोड़ी और खुद को मजबूत बनाए रखा। बैलिस्टिक शील्ड का उपयोग करते हुऐ उन्होंने खुद को सुरक्षित रखा लेकिन गोलीबारी के दौरान, शरीर मे तीन जगह बांए पैर के घुटने में और गर्दन के दाहिने तरफ व पेट के निचले हिस्से में गोली लग गई। इसके बावजूद उन्होंने अदम्य साहस का परिचय दिया और अपनी जान की परवाह किए बिना लश्कर ए तैयबा के आतंकवादी को मार गिराया।

संजय ने जिसे मार गिराया वो था आतंकियों का कमांडर उस्मान- सीआरपीएफ जवान संजय तिवारी और आतंकी के बीच हुई मुठभेड़ के बाद जब वह मारा गया तो उसकी पहचान पाकिस्तानी आतंकी उस्मान लाहौरी के रूप में की गई। एनकाउंटर के बाद तलाशी के दौरान लश्कर-ए-तैयबा के कमांडर के पास से.ऱ्च 47 के साथ कई पिस्टल और कई जिन्दा हैंड ग्रेनेड भी बरामद हुए थे। इधर गोलिबारी मे घायल हुए सीआरपीएफ जवान संजय तिवारी को टीम के सदस्य तत्काल इलाज के लिए अस्पताल लेकर पहुंचे जहां 14 दिनों तक चले इलाज के बाद वे स्वस्थ हुए और फिर देश सेवा में जुट गए।

बाहर से झोपड़ी, अंदर एसी फर्स्ट क्लास, कबाड़ से जुगाड़ कर यूनिवर्सिटी में बनाया फिल्मी सेट

सागर। बाहर से झोपड़ी और अंदर से किसी ट्रेन के एसी फर्स्ट क्लास की सुविधाएं मिले, तो इस अनोखे माहौल का मजा हर कोई लेना चाहेगा। ये मजा सागर यूनिवर्सिटी के परफार्मिंग आर्ट्स डिपार्टमेंट में आसानी से मिल सकता है। दरअसल, यहां के एक प्रोफेसर ने परफार्मिंग आर्ट्स से जुड़ी एक्टीविटीज और शहर में गांव का माहौल देखने के लिए कबाड़ की जुगाड़ से एक ऐसा सेट तैयार किया है, जो गांव की फीलिंग के साथ लग्जरी सुविधाओं की भी एहसास कराता है।

इस सेट पर एक ऐसी झोपड़ी तैयार की गयी है, जिसे अंदर से एसी फर्स्ट क्लास का लुक दिया गया है। बाहर से दिख रही झोपड़ी के अंदर जाते ही आपको किसी ट्रेन के सफर का एहसास होगा। इतना ही नहीं, यहां पर आपको कुआं, तांगा, बैलगाड़ी और कई तरह के सेट नजर आएंगे। यूनिवर्सिटी का परफार्मिंग आर्ट्स डिपार्टमेंट इसका उपयोग, वहां आयोजित होने वाले कार्यक्रम, रिहर्सल और स्टूडेंट्स की प्रैक्टिस के लिए करता है।

पूरी यूनिवर्सिटी से जुगाड़ा कबाड़- अपनी रचनात्मकता को आकार देने के लिए डिपार्टमेंट के असि। प्रोफेसर डॉ राकेश सोनी ने पहले तो यूनिवर्सिटी में डिपार्टमेंट और परिसर में जगह-जगह पड़े कबाड़ को इकट्ठा किया और फिर उनको आकार देना शुरू किया। करीब 12 साल की मेहनत से जो आकार उभर कर आया, वो बाहर से देखने में किसी गांव की तरह लगता है। यहां आपको झोपड़ियां नजर आएंगी, तो साथ ही कुआं, तांगा और बैलगाड़ी भी नजर आएगी। खुले मैदान में तैयार किए गए किसी फिल्म की सेट की तरह दिखने वाले इस जगह को कबाड़ से तैयार किया गया। यूनिवर्सिटी के बेकार हो चुके फर्नीचर, लोहे के सामान, खंभे, लकड़ी, कुर्सियां और अन्य सामग्री के प्रयोग से इसे बनाने में किया गया है।

बाहर से झोपड़ी अंदर से एसी फर्स्ट क्लास ट्रेन की सुविधाएं- यहां बनायी गयी झोपड़ी में एक दो मंजिला झोपड़ी बनायी गयी है। जिसमें नीचे एक साधारण कमरा है और ऊपर भी एक कमरा बनाया गया है। जहां जाने के लिए लोहे के खंभे, एंगल और लकड़ी से सीढ़िया बनायी गयी है। खास बात ये है कि जब इन सीढ़ियों से चढ़कर आप कमरे में प्रवेश करेंगे, तो वहां का नजारा बाहर से बिल्कुल अलग होगा। अंदर जाते ही आपको लगेगा कि जैसे आप किसी ट्रेन के एसी फर्स्ट क्लास डिब्बे में आ गए हैं।

इस कमरे का लुक आपको ट्रेन के सफर की याद दिलाएगा। झोपड़ी के अंदर बाकायदा एसी लगाए गया है। इसके साथ ही बर्थ भी है और बैठने के लिए चेयर भी है। अगर आप कुछ खाना पीना चाहते हैं, तो ट्रेन की तरह एक फोल्डिंग टेबल होती है, जिसे स्नेक ट्रे कहा जाता है, इसके अलावा बर्थ पर आपको ट्रेन की तरह तकिए और चद्दर भी मिलेगें।

क्या कहना है प्रोफेसर का- यूनिवर्सिटी के अंदर गांव का सेट तैयार कर उसमें लग्जरी सुविधाओं की व्यवस्था करने वाले डॉ राकेश सोनी बताते हैं कि आपने बाहर से देखा होगा कि ये एक झोपड़ी है। यहां पर हमने बुंदेलखंड के कल्चर को दिखाने की कोशिश की है। खास बात ये है कि ये सब व्यवस्था जुगाड़ से की गयी है। यूनिवर्सिटी में बहुत सारा सामान लकड़ी, लोहा या फर्नीचर फेंक दिया जाता है या अलग कर दिया जाता है। इन सभी स्क्रैप से हमने स्टूडेंट्स के साथ ये बनाया है। आप इस छोटे से केबिन को देख रहे होंगे, जो मैंने यूनिवर्सिटी की कल्चरल काउसिंल के दफ्तर के तौर पर बनाया है। इसमें सारी सुविधाएं जुगाड़ से की गयी है। इसको ऐसा लुक देने की कोशिश की गयी है, जैसे ट्रेन में एसी फर्स्ट या सेकंड का डिब्बा होता है। इसमें वो सारी सुविधाएं भी दी गयी है। इसमें आराम से चार पांच लोग बैठ भी जाते हैं। स्टूडेंट्स और टीचर भी यहां आकर बैठते हैं। इसमें एसी और पंखा भी लगा हुआ है, ये सब जुगाड़ का है। ये सब जुगाड़ से चीजें जुटायी गयी है। छोटे मोटे सामान की जरूरत होती है, तो हम लोग व्यक्तिगत रूप से पैसा खर्च करके व्यवस्था बनाते हैं।

डॉ राकेश सोनी बताते हैं कि ज्यादातर गर्मी की दोपहर उनकी यहीं बीतती है। जैसा यूनिवर्सिटी में काम होता है, वैसा करते हैं। अगर इधर से काम हो जाता है, तो कर लेते हैं, नहीं तो कल्चरल काउसिंल का एक दफ्तर भी है, वहां पर काम करते हैं। इसके अलावा यहां पर कुआं, तांगा, बैलगाड़ी और अलग-अलग देश और कल्चर के थियेटर के मॉडल बने हुए हैं। इसके पीछे हमारा उद्देश्य ये है कि आज परिवर्तन का दौर है। हर तरह से बदलाव आ रहे हैं, लेकिन हम अपनी संस्कृति और परिवेश से जुड़े रहे और यूनिवर्सिटी में आने के बाद अपने ग्रामीण परिवेश को ना भूले, तो ये झोपड़ी, तांगा, कुआं और बैलगाड़ी अपनी मूल संस्कृति को याद रखने के लिए बनाए हैं।